भारतीय श्रमिकों की प्रमुख समस्याएं

(Main Problems of Indian Labourers)

समस्यायें मानव-जीवन के साथ ही हैं। प्रत्येक विकसित और अविकसित देश में कुछ न कुछ समस्याएं होती हैं। भारत में अनेक प्रकार की समस्यायें हैं। इन समस्याओं में श्रमिकों की समस्या भी एक है। श्रमिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के कारण श्रमिकों की शारीरिक और मानसिक क्षमता का ह्रास होता है। कार्यक्षमता की कमी चाहे शारीरिक हो या मानसिक, उत्पादन को प्रभावित करती है। उत्पादन में कमी आने से देश के विकास की गति धीमी हो जाती है। भारत के श्रमिकों की प्रमुख समस्याओं को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है–

(1) **प्रवासिता**–प्रवासी प्रवृत्ति भारतीय श्रमिकों की मौलिक विशेषता है। प्रवासिता का अर्थ यह है कि भारतीय श्रमिक जहाँ काम करते हैं, वहाँ के मूल निवासी नहीं होते। इसके कारण उनका एक स्थान से दूसरे स्थान को आना-जाना बना रहता है। इसके साथ ही भारतीय श्रमिक फसल और उत्सव के अवसर पर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं। इस कारण उन्हें अपना कार्य छोड़ना पड़ता है। भारतीय श्रमिकों में प्रवासिता के कारणों को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है–

(*i*) कुटीर उद्योगों का पतन,

(*ii*) जनसंख्या में वृद्धि, और

(*iii*) भूमि पर जनसंख्या का अधिक दबाव।

प्रवासिता के दुष्परिणाम–प्रवासिता के दुष्परिणामों को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है–

Scanned with CamScan

(i) कार्य कुशलता में कमी,
(ii) स्वास्थ्य पर बुरा असर,
(iii) अधिक व्यस्तता और मस्तिष्क पर अधिक दबाव,
(iv) स्वस्थ मनोरंजन का अभाव और बुरी प्रवृत्तियों का विकास,
(v) मजदूरी में कमी,
(vi) काम की अनिश्चितता में वृद्धि,
(vii) औद्योगिक संगठनों पर प्रभाव।

(2) **श्रमिक भर्ती की दोषपूर्ण पद्धति**—श्रमिकों की दूसरी महत्वपूर्ण समस्या उनकी भर्ती की पद्धति से सम्बन्धित है। इस समस्या से सम्बन्द्ध कुछ प्रमुख समस्यायें इस प्रकार हैं—

(i) श्रमिकों की भर्ती मध्यस्थों (Intermediaries) द्वारा होती है। ये मध्यस्थ अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा करते हैं—
  (क) श्रमिकों और मालिकों के बीच तनाव और संघर्ष की स्थिति को जन्म देते हैं,
  (ख) श्रमिकों की भर्ती में कुशलता और अकुशलता को महत्व नहीं देते,
  (ग) भर्ती में मजदूरों से कमीशन लेते हैं।
(ii) भर्ती के अतिरिक्त श्रमिकों की पदोन्नति के परिणामस्वरूप मजदूरों में असन्तोष की भावना का विकास होता है।
(iii) स्थानान्तरण में भी पक्षपात किया जाता है। इस कारण भी श्रमिकों में अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म और विकास होता है।

(3) **अनुपस्थितता**—अनुपस्थितता भारतीय श्रमिकों की तीसरी मौलिक विशेषता है। अनुपस्थितता का अर्थ है निर्धारित समय पर काम पर उपस्थित न होना। जब श्रमिक बिना पूर्व सूचना के काम पर नहीं आते, तो इसे अनुपस्थितता कहा जाता है। अनुपस्थितता से श्रमिकों को निम्न हानि उठानी पड़ती है—

(i) इससे श्रमिकों को आर्थिक हानि होती है,
(ii) अनुपस्थित रहने से श्रमिकों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति का विकास होता है, जिससे उनकी उन्नति में बाधा उत्पन्न होती है,
(iii) इस प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप श्रमिकों और मालिकों के बीच संघर्ष की स्थिति का जन्म और विकास होता है,
(iv) इससे परिवार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(4) **श्रमिकों के हेर-फेर की समस्या**—उद्योगों में ऐसा पाया गया है कि कर्मचारियों के कार्यों की प्रकृति में हेर-फेर किया जाता है या परिवर्तन होता रहता है। इस हेर-फेर की समस्या का श्रमिकों के ऊपर निम्न कुप्रभाव पड़ता है—

(i) इससे श्रमिकों के संगठन को हानि पहुँचती है,
(ii) श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी आती है,

Scanned with CamScanner

(iii) सेवाओं में स्थायित्व की कमी के कारण उनके जीवन में उथल-पुथल मची रहती है,

(iv) अनिश्चितता के कारण श्रमिक अपने भविष्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार की योजना का निर्माण नहीं कर सकते,

(v) श्रमिकों में हेर-फेर या परिवर्तन के कारण श्रम संगठनों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है,

(vi) श्रमिकों में हेर-फेर की प्रवृत्ति के कारण भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है,

(vii) इसके परिणामस्वरूप मानवीय व भौतिक संसाधनों के उपयोग में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है।

(5) **निम्न जीवन-स्तर**—जीवन-स्तर का सम्बन्ध मनुष्य की आदत से है। जीवन-स्तर रहन-सहन के तरीकों को कहते हैं। संक्षेप में, जीवन-स्तर का सम्बन्ध मनुष्य की आदतों से है, जिनकी तृप्ति का वह आदी हो गया है। जीवन-स्तर को सुविधा की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) उच्च जीवन-स्तर, और

(ii) निम्न जीवन-स्तर।

श्रमिकों के निम्न जीवन-स्तर के परिणामस्वरूप उनके जीवन में निम्न समस्याओं का जन्म होता है—

(i) कार्यकुशलता में कमी,

(ii) अशिक्षा और अज्ञानता में वृद्धि,

(iii) स्वास्थ्य-सुविधाओं का अभाव,

(iv) असन्तुलित और अपर्याप्त भोजन,

(v) स्वस्थ मनोरंजन का अभाव और जनसंख्या में वृद्धि,

(vi) गन्दी बस्तियों में निवास।

(6) **ऋणग्रस्तता**—भारतीय श्रमिकों की सबसे बड़ी समस्या ऋणग्रस्तता की है जो मजदूरों की कार्यक्षमता में कमी और उनके निम्न जीवन-स्तर का प्रधान कारण है। शाही श्रम आयोग ने अपने अध्ययन में ऐसा पाया कि औद्योगिक क्षेत्र के 3/4 श्रमिक ऋणग्रस्त हैं। औद्योगिक केन्द्रों में श्रमिकों में पाई जाने वाली ऋणग्रस्तता के अनेक कारण हैं।

ऋणग्रस्तता का श्रमिकों के जीवन पर निम्न कुप्रभाव पड़ता है—

(i) श्रमिकों की कार्यकुशलता का ह्रास होता है,

(ii) श्रमिकों के नैतिक चरित्र में गिरावट आती है,

(iii) वर्ग-संघर्ष की भावना का जन्म होता है,

(iv) ऋणग्रस्तता, श्रमिकों की श्रम का मोल-भाव करने की शक्ति को कम करती है। इसके परिणामस्वरूप उन्हें वस्तुओं का अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है,

(v) इससे श्रमिकों में आत्मसम्मान की भावना का लोप होता है,

Scanned with CamScanner

(vi) ऋणग्रस्तता में श्रमिकों के जीवन-स्तर में निरन्तर गिरावट आती रहती है,
(vii) ऋणग्रस्तता के परिणामस्वरूप श्रमिकों की समस्त अभिलाषाओं का विनाश होता है।

(7) **काम करने की बुरी दशायें**—मजदूरों के काम करने की जो दशायें हैं, उनकी विशेषतायें निम्न हैं—

(i) धूल, धुआँ आदि से सुरक्षा का अभाव,
(ii) कल्याण कार्यों की कमी और इनकी अव्यवस्था,
(iii) स्वच्छता का अभाव,
(iv) सुरक्षा का अभाव (यन्त्रों से),
(v) स्वच्छ वायु और प्रकाश की कमी,
(vi) काम के अधिक घण्टे, आदि।

कारखानों में इन बुरी दशाओं में रहकर श्रमिकों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इस कठिन परिश्रम के कारण उनकी कार्यक्षमता में कमी होती है, स्वास्थ्य का स्तर निम्न होता है और ऋणग्रस्तता में वृद्धि होती है।

(8) **पाली व्यवस्था के दोष**—प्रायः सभी देशों और सभी उद्योगों में पाली अथवा शिफ्ट (shift) की प्रथा पाई जाती है। इस पाली-प्रथा के कारण मजदूरों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है—

(i) रात्रि पालियाँ स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं। इससे श्रमिकों की आयु सीमा कम होती है,
(ii) कार्य के घण्टे फैले हुए होने के कारण मजदूरों को असुविधा का अनुभव होता है,
(iii) रात्रि पाली से पति-पत्नी अलग रहते हैं। इससे अनैतिकता में वृद्धि होती है,
(iv) शिफ्ट प्रणाली के कारण मजदूरों को अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है,
(v) कुछ शिफ्ट ऐसे समय में प्रारम्भ और समाप्त होते हैं कि न तो समय पर खाना ही मिल पाता है और न ही नींद पूरी होती है।

(9) **काम करने के अधिक घण्टे**—काम करने के अधिक घण्टे भारतीय श्रमिकों की अगली महत्वपूर्ण समस्या है। काम के घण्टों में अधिकता के कारण श्रमिकों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है—

(i) सामाजिक जीवन के कार्यों की उपेक्षा,
(ii) कार्यक्षमता में कमी,
(iii) स्वास्थ्य में गिरावट।

(10) **स्वास्थ्य की समस्यायें**—श्रमिकों की अन्य समस्याओं की तुलना में स्वास्थ्य की समस्या अधिक महत्वपूर्ण है। आज का औद्योगिक काम अनेक खतरों और जोखिमों से भरा पड़ा है। उन्हें अत्यन्त दयनीय परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

स्वास्थ्य से सम्बन्धित श्रमिकों की प्रमुख समस्याएं इस प्रकार हैं–

(*i*) कार्यस्थल का दोषपूर्ण वातावरण,

(*ii*) हानिकारक पदार्थों का प्रयोग,

(*iii*) आवास की कमी,

(*iv*) चिकित्सा सुविधाओं का अभाव,

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त श्रमिकों की जो और समस्यायें हैं, उन्हें निम्न भागों में बाँटा जा सकता है–

(11) **मजदूरों की छुट्टी और सवैतनिक अवकाश की समस्या।**

(12) **जलवायु की समस्या**–भारत की जलवायु गर्म है और श्रमिकों को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। पोषण के अभाव में उनकी कार्यक्षमता में कमी आती है।

(13) **मजदूरों की निर्धनता की समस्या।**

(14) **दोषपूर्ण प्रबन्ध की समस्या**–इसके अन्तर्गत दो प्रकार की समस्यायें आती हैं–

(*i*) मालिक का व्यवहार, और

(*ii*) काम का दोषपूर्ण विभाजन।

(15) **शिक्षा का अभाव और मजदूरों की अज्ञानी प्रकृति।**

(16) **रूढ़िवादिता और परम्परा प्रेम।**

(17) **आवास की समस्या।**

(18) **पुरानी मशीनों के उपयोग की समस्या।**

(19) **मजदूरों के नैतिक पतन की समस्या**–इस समस्या के अन्तर्गत मुख्य रूप से निम्न समस्यायें आती हैं–

(*i*) जुआ,

(*ii*) मद्यपान, और

(*iii*) वेश्यावृत्ति।

(20) **वर्ग संघर्ष की समस्या।**

(21) **सामाजिक दशाओं और प्रथाओं से सम्बन्धित समस्यायें** जैसे–

(*i*) जाति-प्रथा,

(*ii*) संयुक्त परिवार, और

(*iii*) जातीय रीति-रिवाज और कानून।

(22) **भारतीय श्रमिकों में प्रशिक्षण के अभाव की समस्या।**

विवेकीकरण
(RATIONALIZATION)

श्रम और उद्योग अन्त:संबंधित हैं। विवेकीकरण भी उदयोग में प्रमुख भूमिका अदा करता है। 'विवेकीकरण' अंग्रेजी के 'रेशनलाइजेशन' (Rationalization) का हिन्दी अनुवाद है। रेशनलाइजेशन शब्द 'रेशनल' (Rational) से बना है, जिसका अर्थ है बौद्धिक या विवेकी। विवेकपूर्ण व्यक्ति को विवेकी या बुद्धिमान कहा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि

Scanned with CamScanner